आज की मुरली का सार ---------- Date: 07-06-2014

बाबा ने कहा, अब इस छी-छी गंदी दुनिया को आग लगनी हैं इसलिए शरीर सहित जिसे तुम मेरा-मेरा कहते हो - इसे भूल जाना हैं, इससे दिल नहीं लगानी हैं.

हम चेक करें की हमारा किसमें मेरा-मेरा ज्यादा चलता हैं - तो चार बातें आयेगी. जिसे हम क्रमशः ही हमारे में चेक करेंगे और उसमें से हमारी मन-बुद्धि को हटाने की कोशिश करेंगे.

चार बातें हैं -- शरीर, सम्बन्ध, सम्पति, और साधन

सबसे पहले साधनों से मन-बुद्धि को कैसे निकाले. आज-कल हमारा मन सबसे ज्यादा जाता हैं सेल-फोन पर, फिर हैं कार पर और बाद में हैं कोम्पुटर, टीवी....लिस्ट लंबी हैं. अगर हम सच्चे दिल से अपने-आप को यानी अपनी अन्तर आत्मा को पूछे, कि इसमें से कोई भी साधन मुझ आत्मा को सुख-शांति देता हैं, तो सही जवाब तुरंत मिलेगा. अमेरिका में ब्रहमाकुमारिझ का एक सेन्टर हैं जहाँ पर कोई भी सेल-फोन सर्विस प्रोवाइडर के टावर कि सिगनल आती नहीं हैं और हर साल बहुत से लोग वहॉ विजित करते हैं और सब के मुखसे इतना जरूर निकलता हैं कि सेन्टर में शांति बहुत अच्छी हैं और इसका एक कारण ये भी हैं की वहॉ सेल-फोन युज नहीं हो सकता, क्योंकि सिगनल ही नहीं हैं. अब कलयुगी तमोप्रधान वायुमंडल में रहते स्वयं को सेल-फोन सिगनल से तो नहीं बचा सकते लेकिन बाबा ने हमें राजयोग सिखाकर हमारी बुद्धि को डिवाइन बना दिया हैं, जिसे हम अपने मन को कंट्रोल जरूर कर सकते हैं. इसका मतलब हैं साधनों को युज करना हैं लेकिन अपनी जरूरीयात अनुसार, ना की अपने शोख के कारण, उसमें वशीभूत नहीं होना हैं.

दूसरा हैं सम्पति. ज़रुरियात से ज्यादा, गलत तरीके अपनाकर सम्पति इकट्ठी करनेवालों की हालत तो हम जानते ही हैं, रात को नींद नहीं आना, बिना कारण टेन्सन में रहना, छोटी उमर में ही हार्टएटेक आना...लिस्ट लंबी हैं. अगर ईश्वरीय नियमों के आधार पर ही कमायेंगे, ज्यादा लोभ-लालच में नहीं जायेंगे और कोई भी गलत तरीका नहीं अपनायेंगे तो हमारे पास सम्पति होते भी उसमें लगाव नहीं रहेगा, ये एक कुदरती सत्य हैं.

तीसरा हैं सम्बन्ध. बाबा कलयुगी सम्बन्ध को बंधन कहते हैं क्योंकि यहॉ के सम्बन्ध ज्यादातर दुख देने वाले हैं. जब की सतयुग के सम्बन्ध सुख देने वाले हैं. यहॉ का कोई भी सम्बन्ध किसी के शरीर से मोह या लगाव के आधार पर ही होता हैं. सतयुग आत्मिक सम्बन्ध हैं उसमें कोई विकार की बदबू नहीं हैं. हमें स्वयं में चेक करना हैं की हमारे किसी भी सम्बन्ध में बंधन तो नहीं हैं. ऐसा तो नहीं के इसके बिना रह नहीं सकते. याद रहे अगर मेरा कोई भी सम्बन्ध में बंधन हैं तो वही अन्त समय में याद आयेगा और हम फेल हो जायेंगे. सर्व सम्बन्धों से मुक्त होने का उपाय एक ही हैं की सर्व सम्बन्ध मुझे एक बाप से ही अनुभव करने हैं और इसके लिए बार-बार एक ही बात याद रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई....

सबसे ज्यादा मेरापन हैं स्वयं के शरीर में. एक होता हैं शरीर की संभाल करना और दूसरा होता हैं शरीर में मोह होना. शरीर का संभाल करने के लिए शरीर को स्वच्छ, और्गेनिक, फ्रेश, शुद्ध शाकाहारी, ईश्वरीय नियमों अनुसार भोजन दो, नियम अनुसार व्यायाम करो, सिझन अनुसार कपडे पहनो और ईश्वरीय नियम अनुसार नींद और स्नान करो. लेकिन अगर शरीर में मोह है तो शरीर को बार-बार आईने में जाके देखेंगे, शरीर का शृंगार करेंगे, शरीर में कोई रोग न हो तो भी डॉक्टर के पास इसको और भी रुष्ट-पुष्ट कराने के लिए जायेंगे, शरीर को गंदा भोजन देंगे और शरीर द्वारा अलग-अलग रसा-स्वाद लेंगे...ऐसी बहुत लम्बी लिस्ट हैं जो हम अपने में चेक करें की हमारा इस कलयुगी देह से कितना मोह हैं.

बाबा कहते हैं हमारा अन्त समय ऐसा हो जैसे की एक सर्प अपनी खाल निकाल देता हैं ऐसे हम आत्माये भी बाबा की याद में खुशी-खुशी शरीर को छोड़ दे तो बाबा की गोंद में चले जायेंगे.

ॐ शांति.

Pls. provide your feedback to Atma Bhai – a.brahmin.soul@gmail.com
www.bkdrluhar.com